S. S. College, Jehanabad
class - B.A. Part I (Hons.)
Subject :- Psychology paper - I (General Psychology)
Teacher's Name :- Dr. Vivek Nand Sharma
e-content for two days | Date - 07.07.2021, 08.07.2021

Topic — Emotion
James-Lange Theory of Emotion.

मनोविज्ञान के क्षेत्र में संवेग मनोवैज्ञानिकों के लिए एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र रहा है। सामान्यतः संवेग से तात्पर्य एक ऐसी उत्तेजित अवस्था से है जिसमें कुछ आंगिक प्रतिक्रियाएँ (Bodily reactions), भावभंगिमा व्यवहार (expressive movements) तथा कुछ आत्मनिष्ठ भाव (Subjective feelings) अर्थात् व्यक्तिगत सुखद भाव इत्यादि सम्मिलित होते हैं। संवेग के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने अनेक ही सिद्धान्त के रूप में विश्लेषण करने का प्रयास किया है जिनमें James-Lange Theory सबसे पुराना सिद्धान्त है। यह संवेग का एक तार्किक सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन अमेरिकन मनोवैज्ञानिक William James तथा डेनिश शरीरविज्ञानी Carl Lange द्वारा स्वतंत्र रूप से 1880 में किया गया। यूँकि दोनों वैज्ञानिकों के विचार संवेग के सम्बन्ध में एक दूसरे से मिलते-जुलते थे, इसलिए इस सिद्धान्त का नाम दोनों के संयुक्त नाम पर रखा गया। इस सिद्धान्त द्वारा संवेग की व्याख्या सामान्य बोध (common sense) की व्याख्या से भिन्न विपरीत है। सामान्य बोध के अनुसार, पहले किसी भी संवेगात्मक उत्तेजना का प्रत्यक्षण होता है। उसके बाद संवेगात्मक अनुभूति होती है। संवेगात्मक अनुभूति के बाद व्यवहार या शारीरिक परिवर्तन होते हैं। इस तरह संवेगात्मक अनुभूति पहले होती है और शारीरिक परिवर्तन या व्यवहार इसके बाद होता है।

लेकिन जेम्स-लांजे सिद्धान्त के अनुसार, पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है और तब संवेगात्मक अनुभूति होती है। यदि संवेगात्मक व्यवहार नहीं होगा, तो संवेगात्मक अनुभूति भी नहीं होती। जैसे - यदि व्यक्ति साँप या भालू देखता है, तो वह भागता है इसलिए वह डरता है। James (1913) के शब्दों में — "my theory ... is that the bodily changes follow directly the perception of the exciting facts, and that our feeling of the same changes as they occur is the emotion."

इस सिद्धान्त के अनुसार, संवेग की

Ajanta Oxford

की कल्पना में भावनाओं का एक विशेष क्रम होता है।

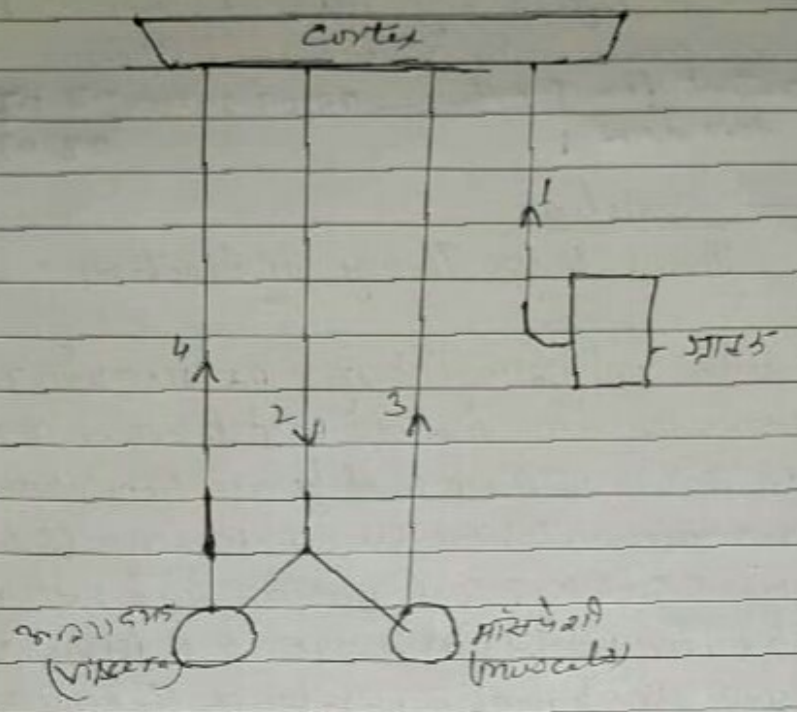

Jamus - Lange theory

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि सबसे पहले कोई संवेगात्मक उद्दीपन उपस्थित होता है जिससे प्राणी ज्ञानेन्द्रिय उत्तेजित हो जाती है। ज्ञानेन्द्रिय के उत्तेजित होने पर तंत्रिका आवेग उत्पन्न होता है जो संवेदी स्नायु द्वारा मार्ग एक से होकर Cortex में जाता है। तब प्राणी को उस संवेगात्मक उद्दीपन का संज्ञान होता है। इसके बाद आंतरिक परिवर्तन का अनुभव होता है। संज्ञान होने के बाद गतिवाही स्नायु द्वारा तंत्रिका आवेग Cortex से निकलकर मार्ग दो से होकर अन्तरांग (viscera), पेशियों तथा ग्रन्थियों में पहुँचता है जिससे नाड़ी-तन्त्र के आंतरिक परिवर्तन होने लगते हैं। इसके बाद आंतरिक परिवर्तनों की चेतना प्राप्त होती है और इसी के साथ संवेगात्मक अनुभूति भी होती है। संवेदी स्नायु द्वारा तंत्रिका-आवेग मार्ग तीन और चार से होकर पुनः Cortex में पहुँचता है और तब प्राणी को आंतरिक परिवर्तनों का ज्ञान होता है और इसी ज्ञान के साथ संवेग की अनुभूति होती है।

उपर्युक्त संवेगात्मक क्रम को एक उदाहरण द्वारा अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। यदि व्यक्ति के पास से कोई सांप (संवेगात्मक उद्दीपन) उपस्थित होता है तो सबसे पहले उसे उस उद्दीपन का ज्ञान होता है। इसके बाद परानुकम्पित स्नायु तंत्र के-

सक्रिय होने के साथ शारीरिक परिवर्तन होने लगते हैं। इन परिवर्तनों की जानकारी जब मस्तिष्क को पहुँचती है तब उसे भय की अनुभूति होने लगती है तब उसे भय की अनुभूति होने लगती है। स्पष्ट है कि इस सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक अनुभूति का आधार संवेगात्मक व्यवहार या शारीरिक परिवर्तन है। इस मत से पहले शारीरिक परिवर्तन का व्यवहार होता है और तब संवेगात्मक अनुभूति होती है। James (1890) ने स्पष्ट शब्दों में कहा है "We feel sorry because we cry, angry because we strike, afraid because we tremble."

James ने अपने सिद्धान्त के पक्ष में एक तर्क यह दिया कि अभिनेता या अभिनेत्री किस तरह का अभिनय में व्यवहार करते हैं, ठीक उसी तरह उनमें संवेगात्मक अनुभूति होती है। अतः निरीक्षण परीक्षण से यह पता चलता है कि क्रोध का अभिनय करते समय अभिनेता की वास्तव में क्रोध की अनुभूति होती है और भय का अभिनय करते समय उसे भय संवेग की अनुभूति होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक अनुभूति-वास्तव में संवेगात्मक व्यवहार पर आधारित है। Lange ने संवेग में मुख्य रूप से Vasomotor disturbance (वाहिका गति उपद्रव) पर अधिक बल दिया है।

Laird (1984) तथा Mathumato (1987) द्वारा Facial feedback hypothesis (आनन पुनर्निवेशन प्राक्कल्पना) के संदर्भ में किये गये अध्ययनों से भी James-Lange theory का समर्थन मिलता है। यह प्राक्कल्पना यह बताता है कि आनन अभिव्यक्ति संवेगात्मक अवस्थाओं को प्रभावित करता है तथा साथ-ही-साथ उन्हें प्रतिनिधित्व भी करता है। जैसे- जब हम हँसते हैं तो सुखी का अनुभव करते हैं और रोने लगते हैं या माँ चढ़ाते हैं, तो हमें दुःख का अनुभव होता है। McCanne & Anderson (1987) तथा Ekman et al (1990) द्वारा किये गये अध्ययनों से भी James-Lange theory का काफी समर्थन मिला है।

लेकिन अनेक मनोवैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त की कटु आलोचना की है जो इस प्रकार है :-

① Sherrington (1900) ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि संवेगात्मक व्यवहार वास्तव में संवेगात्मक अनुभव का आधार नहीं है। इन्होंने एक कुत्ते पर प्रयोग किया। कुत्ते की गर्दन के पास कुछ ऐसे तंत्रिका को काट दिया जो जाकर सिरमौर शारीरिक उपद्रवों की सूचना cortex में लाया करते थे जाकर। फिर भी कुत्ते में भय, क्रोध इत्यादि संवेग देखे गये। इस अध्ययन से James-Lange theory का खंडन हो जाता है।

② Cannon, Lewis & Britton (1927) ने प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर यह बताया कि संवेगात्मक अनुभूति के लिए संवेदात्मक अनुभव का होना आवश्यक नहीं है। उन्होंने बिल्ली के Sympathetic nerve को काट दिया। इस तरह शारीरिक उपद्रव का ज्ञान बिल्ली में समाप्त नहीं था। James के अनुसार बिल्ली को किसी तरह के संवेग का अनुभव नहीं होना चाहिए था, लेकिन बिल्ली में सभी तरह के संवेग होते देखे गये।

③ Schachter (1964) ने भी इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि यह सिद्धान्त संवेग की व्याख्या करने में सफल नहीं है। उन्होंने प्रयोगों में Adrenin की सूई देकर शारीरिक उपद्रव उत्पन्न किया। प्रयोगों से ज्ञात यह पता गया कि जो किसी संवेग का अनुभव हुआ कि नहीं, तो प्रयोगों ने यह बताया कि उन्हें किसी किस प्रकार के संवेग की अनुभूति नहीं हुई। शारीरिक उपद्रव संवेगात्मक अनुभूति का आधार होता तो उसे संवेग का अनुभव होना चाहिए था। इस तरह जेम्स-लांगे सिद्धान्त गलत साबित हो जाता है। Marañon (1924) ने भी अपने प्रयोगों में epinephrine की सूई दी जिससे उनके शरीर में कई तरह के शारीरिक परिवर्तन हुए लेकिन उन्हें किसी प्रकार के संवेग का अनुभव नहीं हुआ।

④ Archer ने अभिनेता तथा अभिनेत्री का एक अध्ययन किया। अभिनेताओं विधि का व्यवहार करते हुए पाया उनसे यह पूछा गया कि अभिनय करते समय उन्हें किस-किस तरह के संवेग का अनुभव होता है या नहीं, विशेष तरह के व्यवहार वे करते हैं। अधिकतर अभिनेता तथा अभिनेत्रियों ने स्पष्ट रूप से नकारात्मक उत्तर दिया। इससे भी James का सिद्धान्त गलत साबित हो जाता है।

⑤ Cannon (1927) ने भी James-Lange theory की आलोचना करते हुए कहा कि संवेग का केन्द्र सहानुभूतिक तन्त्र न होकर Hypothalamus है। उन्होंने बिल्ली पर प्रयोग किया और देखा कि बिल्ली के Hypothalamus को काट देने पर संवेग का अनुभव रुक गया। इसी और देखा सहानुभूतिक तन्त्र को काट देने पर बिल्ली में संवेग का अनुभव पहले की तरह होता रहा। इससे यह साबित हो जाता है कि संवेग का आधार सहानुभूतिक तन्त्र नहीं है, बल्कि Hypothalamus है। Cannon ने बिल्ली पर प्रयोग करके यह साबित कर दिया कि संवेगात्मक व्यवहार एवं संवेगात्मक अनुभूति दोनों प्रक्रियाएँ साथ-साथ होती हैं।

⑥ Schachter & Singer (1962) ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह बताया कि संज्ञान का संवेगों में महत्वपूर्ण स्थान है। इस तरह संवेगात्मक परिस्थिति में विभिन्न कारकों की विभिन्न संवेग उत्पन्न कर सकते हैं।

इस तरह यह कहा जा सकता है कि शारीरिक परिवर्तन पर ही संवेगात्मक अनुभूति निर्भर नहीं करती है। अतः James-Lange theory केवल one-sided hypothesis है जिसका कोई विशेष प्रायोगात्मक आधार नहीं है।

—— x —— x ——